आर्थिक विकास और पंचायती राज

कमल किशोर मंडल

रूपा कुमारी

विकास निरंतर सकारात्मक परिवर्तन का नाम है यह अपेक्षित भी है और आवश्यक भी। आर्थिक विकास, विकास के बहुआयामी पक्षों में से एक है जो अन्य पक्षों के समान होते हुए भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह एक प्रक्रिया है जिसे प्राप्त करने की इच्छा किसी भी व्यक्ति, समाज या व्यवस्था की होती है अर्थात् आर्थिक विकास स्वयं में एक साध्य भी है और समग्र साध्य(समग्र विकास) को प्राप्त करने का एक साधन भी।

पंचायती राज शासन के स्वरूपों में से एक है जिसके द्वारा स्थानीय लोगों को, स्थानीय विकास के कार्यों का स्थानीय स्तर पर सम्पादन करना होता है। निश्चित ही इन दोनों में एक गहरा अन्तर्सम्बन्ध उपस्थित है। आर्थिक, सामाजिक अधेगति से निकलकर आधुनिक ज्ञान–विज्ञान व तकनीकों का प्रकाश में आना तथा अपनी अतीत की गौरवशाली उपब्धियों को सहेजते हुए उनके संदर्भ में उर्ध्वगामी जीवन प्राप्त करना किसी भी देश के लिए चुनौती है। ऐसा तभी संभव है, जब सम्पूर्ण देश इसके प्रति सचेत गतिशील और सशक्त हों।